उत्तराखंड से होगी देश में जातिगत जनगणना की शुरुआत

चार धाम में अभी तक पहुंचे 27 लाख से अधिक श्रद्धालु

दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 04 | मूल्य 15 रुपये | 15-21 जून, 2025

सपनों की उड़ान में जिंदगी का "दर्दनाक अंत"

EXPERIENCE HELI TOUR WITH

Himgiri
Aviation & Tourism

SAME DAY TOUR

Do Dham

YATRA BY HELICOPTOR

DEHRADUN • KEDARNATH • BADRINATH • DEHRADUN

LIMITED SEATS ARE LEFT **BOOK NOW**

Contact for Reservation | 8433456398, 9410353164

Email: himgiritourism@gmail.com

6 Municipal Road, Opps. Bala hissar Academy, Dalanwala, Dehradun-248001 (UK)

वर्ष 15 | अंक 04

दिव्य हिमगिरि

15-21 जून, 2025

संपादक
कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

ब्यूरो प्रमुख
मोनिका डबराल

विज्ञापन
पूनम आर्या

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार : डॉ. रजनीश गौतम
पौडी : रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार : के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर : हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली : मुकेश रावत
रुड़की : श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल : शीतल तिवारी
अल्मोड़ा : संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर : अजय शर्मा
प्रसार : रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून से मुद्रित तथा 39/7 ई, ई. सी. रोड, (निकट मार्शल स्कूल सीनियर विंग) देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित। संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*

*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

एसी के तापमान पर होगा सरकार का कंट्रोल

अपने घर या कार्यालय को मनमर्जी के मुताबिक वातानुकूलित करने की प्रवृति अब लोगों को बदलनी होगी। क्योंकि, आने वाले दिनों में एसी (एअर कंडीशनर) की हवा को ज्यादा ठंडा करने का विकल्प ही मौजूद नहीं होगा। ऐसा इसलिए, क्योंकि केंद्र सरकार एअर कंडीशनर के तापमान का मानकीकरण करने वाली है। नए नियमों के तहत इसके तापमान को न्यूनतम 20 डिग्री और अधिकतम 28 डिग्री सेल्सियस के दायरे में ही रखा जाएगा। इससे न केवल बिजली की बचत होगी, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आएगी, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहद जरूरी है। कई देशों में इस तरह के नियम पहले से लागू हैं। भारत में भी इसको लेकर काफी पहले से विचार किया जा रहा था, लेकिन कुछ तकनीकी पहलू और सरकारी स्तर पर इच्छाशक्ति का अभाव इसमें रोड़ा बना हुआ था, पर अब सरकार ने इस दिशा में पहल करते हुए नए नियमों के मसविदे को अंतिम रूप देना शुरू कर दिया है। देश में वातानुकूलन के लिए तापमान का मानकीकरण इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि गर्मियों के दिनों में बिजली की मांग चरम पर पहुंच जाती है। इसमें सबसे ज्यादा योगदान एअरकंडीशनर और हवा को ठंडा करने वाले अन्य उपकरणों का होता है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर वातानुकूलन के समय तापमान तय सीमा में रखा जाए तो देशभर में सालाना हजारों करोड़ यूनिट बिजली की बचत हो सकती है। इससे कोयला आधारित ऊर्जा संयंत्रों पर भी दबाव कम होगा और कार्बन उत्सर्जन में भी खासी कमी आएगी। भारत के शून्य कार्बन उत्सर्जन लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में भी यह पहल महत्त्वपूर्ण साबित हो सकती है। वैसे भी अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए यह कदम उठाना जरूरी हो गया था। जापान, इटली, स्पेन और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में एअर कंडीशनर के तापमान को लेकर पहले से ही सख्त नियम लागू हैं। जापान में तापमान की सीमा 26 डिग्री, जबकि इटली और स्पेन में 23 से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच रखी गई है। ऐसा बताया गया है कि नया नियम फिलहाल सभी नए एअर कंडीशनर पर लागू होगा। यानी आने वाले दिनों में बाजार में उपलब्ध एअर कंडीशनर में तापमान 20 डिग्री से नीचे और 28 डिग्री सेल्सियस से ऊपर नहीं रखा जा सकेगा। इसका एक फायदा यह भी होगा कि बिजली की खपत कम होने से बिल की राशि भी कम होगी। यानी समाज के मध्यम वर्ग के लिए सरकार का यह कदम राहत भरा होगा। घरों के अलावा सार्वजनिक भवनों, होटलों, माल, कार्यालयों, विपणन केंद्रों और कारों में लगे वातानुकूलन उपकरणों पर भी ये नियम लागू होंगे। हालांकि, घरों में लगे पुराने एअरकंडीशनर को लेकर सरकार की ओर से अभी स्थिति स्पष्ट नहीं की गई है। दूसरे पहलू से देखा जाए तो कमरे में बहुत कम तापमान रखना स्वास्थ्य के लिए भी नुकसानदेह है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि 20 डिग्री सेल्सियस से कम तापमान पर रहने से सांस संबंधी समस्याएं, सर्दी-खांसी, जोड़ों में दर्द और त्वचा संबंधी दिक्कतें बढ़ जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी मानना है कि बच्चों, बुजुर्गों और बीमार व्यक्तियों के लिए 24-26 डिग्री का तापमान आदर्श होता है।

कुँवर राज अस्थाना

क्या कक्षाओं में बनाए जा सकते हैं पत्रकार?

एआई की चुनौतियों के बीच मीडिया शिक्षा का भविष्य!

प्रो. संजय द्विवेदी

कृत्रिम बुद्धिमता (आर्टीफिसिएल इंटलीजेंस) के दौर में मीडिया और जनसंचार शिक्षा फिर चुनौतियों से घिरी है। बहुत सारे सामान्य काम अब एआई के माध्यम से संभव हो रहे हैं, जिनके लिए विशेषज्ञता की जरूरत नहीं है। एआई की गति, त्वरा और शुद्धता ने सामान्य पत्रकारों के लिए संकट खड़ा कर दिया है। एक समय था जब माना जाता है कि पत्रकार पैदा होते हैं और पत्रकारिता पढ़ा कर सिखाई नहीं जा सकती। अब वक्त बदल गया है। जनसंचार का क्षेत्र आज शिक्षा की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। वर्ष 2020 में भारत में मीडिया शिक्षा के 100 वर्ष पूरे हुए थे। वर्ष 1920 में थियोसोफिकल सोसायटी के तत्वावधान में मद्रास राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में डॉक्टर एनी बेसेंट ने पत्रकारिता का पहला पाठ्यक्रम शुरू किया था। लगभग एक दशक बाद वर्ष 1938 में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के पाठ्यक्रम को एक सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में शुरू किया गया। इस क्रम में पंजाब विश्वविद्यालय, जो उस वक्त के लाहौर में हुआ करता था, पहला विश्वविद्यालय था, जिसने अपने यहां पत्रकारिता विभाग की स्थापना की। भारत में पत्रकारिता शिक्षा के संस्थापक कहे जाने वाले प्रोफेसर पीपी सिंह ने वर्ष 1941 में इस विभाग की स्थापना की थी। अगर हम स्वतंत्र भारत की बात करें, तो सबसे पहले मद्रास विश्वविद्यालय ने वर्ष 1947 में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की स्थापना की।

इसके पश्चात कलकत्ता विश्वविद्यालय, मैसूर के महाराजा कॉलेज, उस्मानिया यूनिवर्सिटी एवं नागपुर यूनिवर्सिटी ने मीडिया शिक्षा से जुड़े कई कोर्स शुरू किए। 17 अगस्त, 1965 को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने भारतीय जन संचार संस्थान की स्थापना की, जो आज मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में पूरे एशिया में सबसे अग्रणी संस्थान है। आज भोपाल में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, रायपुर में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय एवं जयपुर में हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय पूर्ण रूप से मीडिया शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं।

भारत में मीडिया शिक्षा का इतिहास 100 वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं, परंतु यह अभी तक इस उलझन से मुक्त नहीं हो पाया है कि यह तकनीकी है या वैचारिक। तकनीकी एवं वैचारिकी का द्वंद्व मीडिया शिक्षा की उपेक्षा के लिए जहां उत्तरदायी है, वहां सरकारी उपेक्षा और मीडिया संस्थानों का सक्रिय सहयोग न होना भी मीडिया शिक्षा के इतिहास की तस्वीर को धुंधली प्रस्तुत करने को विवश करता है।

भारत में जब भी मीडिया शिक्षा की बात होती है, तो प्रोफेसर के. ई. ईपन का नाम हमेशा याद किया जाता है। प्रोफेसर ईपन भारत में पत्रकारिता शिक्षा के तंत्र में व्यावहारिक प्रशिक्षण के पक्षधर थे। प्रोफेसर ईपन का मानना था कि मीडिया के शिक्षकों के पास पत्रकारिता की औपचारिक शिक्षा के साथ साथ मीडिया में काम करने का प्रत्यक्ष अनुभव भी होना चाहिए, तभी वे प्रभावी ढंग से बच्चों को पढ़ा पाएंगे। आज देश के अधिकांश पत्रकारिता एवं जनसंचार शिक्षण संस्थान, मीडिया शिक्षक के तौर पर ऐसे लोगों को प्राथमिकता दे रहे हैं, जिन्हें अकादमिक के साथ साथ पत्रकारिता का भी अनुभव हो। ताकि ये शिक्षक ऐसा शैक्षणिक माहौल तैयार कर सकें, ऐसा शैक्षिक पाठ्यक्रम तैयार कर सकें, जिसका उपयोग विद्यार्थी आगे चलकर अपने कार्यक्षेत्र में भी कर पाएं। पत्रकारिता के प्रशिक्षण के समर्थन में जो तर्क दिए जाते हैं, उनमें से एक दमदार तर्क यह है कि यदि डॉक्टरी करने के लिए कम से कम एम.बी.बी.एस. होना जरूरी है, वकालत की डिग्री लेने के बाद ही वकील बना जा सकता है तो पत्रकारिता जैसे महत्वपूर्ण पेशे को किसी के लिए भी खुला कैसे छोड़ा जा सकता है?

दरअसल भारत में मीडिया शिक्षा मोटे तौर पर छह स्तरों पर होती है। सरकारी विश्वविद्यालयों या कॉलेजों में, दूसरे, विश्वविद्यालयों से संबंद्ध संस्थानों में, तीसरे, भारत सरकार के स्वायत्तता प्राप्त संस्थानों में, चौथे, पूरी तरह से प्राइवेट संस्थान, पांचवे डीम्ड विश्वविद्यालय और छठे, किसी निजी चैनल या समाचार पत्र के खोले गए अपने मीडिया संस्थान। इस पूरी प्रक्रिया में हमारे सामने जो एक सबसे बड़ी समस्या है, वो है किताबें। हमारे देश में मीडिया के विद्यार्थी विदेशी पुस्तकों पर ज्यादा निर्भर हैं। लेकिन अगर हम देखें तो भारत और अमेरिका के मीडिया उद्योगों की संरचना और कामकाज के तरीके में बहुत अंतर है। इसलिए मीडिया के शिक्षकों की ये जिम्मेदारी है, कि वे भारत की परिस्थितियों के हिसाब से किताबें लिखें। मीडिया शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आज मीडिया एजुकेशन काउंसिल की आवश्यकता है। इसकी मदद से न सिर्फ पत्रकारिता एवं जनसंचार शिक्षा के पाठ्यक्रम में सुधार होगा, बल्कि मीडिया इंडस्ट्री की जरुरतों के अनुसार पत्रकार भी तैयार किये जा सकेंगे। आज मीडिया शिक्षण में एक स्पर्धा चल रही है। इसलिए मीडिया शिक्षकों को ये तय करना होगा कि उनका लक्ष्य स्पर्धा में शामिल होने का है, या फिर पत्रकारिता शिक्षण का बेहतर माहौल बनाने का है। न्यू मीडिया आज न्यू नॉर्मल है। हम सब जानते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कारण लाखों नौकरियां गई हैं। इसलिए हमें मीडिया शिक्षा के अलग अलग पहलुओं पर ध्यान देना होगा और बाजार के हिसाब से प्रोफेशनल तैयार करने होंगे। नई शिक्षा नीति में क्षेत्रीय भाषाओं पर ध्यान देने की बात कही गई है। जनसंचार शिक्षा के क्षेत्र में भी हमें इस पर ध्यान देना होगा। मीडिया शिक्षण संस्थानों के लिए आज एक बड़ी आवश्यकता है क्षेत्रीय भाषाओं में पाठ्यक्रम तैयार करना। भाषा वो ही जीवित रहती है, जिससे आप जीविकोपार्जन कर पाएं और भारत में एक सोची समझी साजिश के तहत अंग्रेजी को जीविकोपार्जन की भाषा बनाया जा रहा है। ये उस वक्त में हो रहा है, जब पत्रकारिता अंग्रेजी बोलने वाले बड़े शहरों से हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शहरों और गांवों की ओर मुड़ रही है। आज अंग्रेजी के समाचार चैनल भी हिंदी में डिबेट करते हैं। सीबीएससी बोर्ड को देखिए जहां पाठ्यक्रम में मीडिया को एक विषय के रूप

में पढ़ाया जा रहा है। क्या हम अन्य राज्यों के पाठ्यक्रमों में भी इस तरह की व्यवस्था कर सकते हैं, जिससे मीडिया शिक्षण को एक नई दिशा मिल सके।

एक वक्त था जब पत्रकारिता का मतलब प्रिंट मीडिया होता था। वर्ष 2008 में अमेरिकी लेखक जेफ गोमेज ने 'प्रिंट इज डेड' पुस्तक लिखकर प्रिंट मीडिया के खत्म होने की अवधारणा को जन्म दिया था। उस वक्त इस किताब का रिव्यू करते हुए एंटोनी चिथम ने लिखा था कि, ''यह किताब उन सब लोगों के लिए 'वेकअप कॉल' की तरह है, जो प्रिंट मीडिया में हैं, किंतु उन्हें यह पता ही नहीं कि इंटरनेट के द्वारा डिजिटल दुनिया किस तरह की बन रही है।'' वहीं एक अन्य लेखक रोस डावसन ने तो समाचारपत्रों के विलुप्त होने का, समय के अनुसार एक चार्ट ही बना डाला। इस चार्ट में जो बात मुख्य रूप से कही गई थी, उसके अनुसार वर्ष 2040 तक विश्व से अखबारों के प्रिंट संस्करण खत्म हो जाएंगे।

मीडिया शिक्षण संस्थानों को अपने पाठ्यक्रमों में इस तरह के बदलाव करने चाहिए, कि वे न्यू मीडिया के लिए छात्रों को तैयार कर सकें। आज तकनीक किसी भी पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मीडिया में दो तरह के प्रारूप होते हैं। एक है पारंपरिक मीडिया जैसे अखबार और पत्रिकाएं और और दूसरा है डिजिटल मीडिया। अगर हम वर्तमान संदर्भ में बात करें तो सबसे अच्छी बात ये है कि आज ये दोनों प्रारूप मिलकर चलते हैं। आज पारंपरिक मीडिया स्वयं को डिजिटल मीडिया में परिवर्तित कर रहा है। जरूरी है कि मीडिया शिक्षण संस्थान अपने छात्रों को 'डिजिटल ट्रांसफॉर्म' के लिए पहले से तैयार करें। देश में प्रादेशिक भाषा यानी भारतीय भाषाओं के बाजार का महत्व भी लगातार बढ़ रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार अंग्रेजी भाषा के उपभोक्ताओं का डिजिटल की तरफ मुड़ना लगभग पूरा हो चुका है। ऐसा माना जा रहा है कि वर्ष 2030 तक भारतीय भाषाओं के बाजार में उपयोगकर्ताओं की संख्या 500 मिलियन तक पहुंच जाएगी और लोग इंटरनेट का इस्तेमाल स्थानीय भाषा में करेंगे। जनसंचार की शिक्षा देने वाले संस्थान अपने आपको इन चुनौतियों के मद्देनजर तैयार करें, यह एक बड़ी जिम्मेदारी है।

(लेखक भारतीय जन संचार संस्थान-आईआईएमसी, महानिदेशक रहे हैं।)

उत्तराखंड से होगी देश में जातिगत जनगणना की शुरुआत

पिछले दिनों केंद्र की मोदी सरकार ने भारत में जातिगत जनगणना कराने की मंजूरी दे दी। देश में आजादी के बाद यह पहली जातीय जनगणना होगी, जिसे मूल जनगणना के साथ ही कराया जाएगा। कांग्रेस समेत कई विपक्षी पार्टियों देश में जातीय जनगणना कराने की लंबे समय से मांग करती रही हैं। यह जनगणना दो चरणों में की जाएगी। गृह मंत्रालय ने बताया कि पहला फेज 1 अक्टूबर 2026 से शुरु होगा, जिसमें 4 पहाड़ी राज्य- हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं। 1 मार्च 2027 से दूसरा फेज शुरू होगा, जिसमें देश के बाकी राज्यों में जातीय जनगणना शुरू होगी। इससे जुड़ा नोटिफिकेशन 16 जून को आ सकता है। भारत में हर दस साल में जनगणना होती है। पहली जनगणना 1872 में हुई थी। 1947 में आजादी मिलने के बाद पहली जनगणना 1951 में हुई थी और आखिरी जनगणना 2011 में हुई थी।

केंद्र सरकार ने भारत में जातिगत जनगणना कराने की हरी झंडी दे दी है। यह जाति जनगणना दो चरणों में की जाएगी। गृह मंत्रालय ने बताया कि पहला फेज 1 अक्टूबर 2026 से शुरु होगा, जिसमें 4 पहाड़ी राज्य- हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं। 1 मार्च 2027 से दूसरा फेज शुरू होगा, जिसमें देश के बाकी राज्यों में जातीय जनगणना शुरू होगी। इससे जुड़ा नोटिफिकेशन 16 जून 2025 को आधिकारिक राजपत्र में पब्लिश किया जा सकता है।

देशभर में जातिगत गणना की मांग काफी समय से उठती रही है। भारत में हर दस साल में जनगणना होती है। पहली जनगणना 1872 में हुई थी। 1947 में आजादी मिलने के बाद पहली जनगणना 1951 में हुई थी और आखिरी जनगणना 2011 में हुई थी। आंकड़ों के मुताबिक, 2011 में भारत

की कुल जनसंख्या 121 करोड़ थी, जबकि लिंगानुपात 940 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष और साक्षरता दर 74.04 फीसदी था। देश में जनगणना की शुरुआत 1881 में हुई थी। पहली बार हुई जनगणना में जातिगत जनगणना के आंकड़े जारी हुए थे। इसके बाद हर दस साल पर जनगणना होती रही। 1931 तक की जनगणना में हर बार जातिवार आंकड़े भी जारी किए गए। 1941 की जनगणना में जातिवार आंकड़े जुटाए गए थे, लेकिन इन्हें जारी नहीं किया गया। आजादी के बाद से हर बार की जनगणना में सरकार ने सिर्फ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के ही जाति आधारित आंकड़े जारी किए। अन्य जातियों के जातिवार आंकड़े 1931 के बाद कभी प्रकाशित नहीं किए गए। जनगणना कर्मचारी हर घर पहुंचकर लोगों की जानकारी इकट्ठा करेंगे, जिसमें उनकी जाति की जानकारी भी शामिल होगी। यह कदम जाति आधारित आंकड़ों को इकट्ठा करने और समाज के विभिन्न वर्गों की स्थिति को समझने में मदद करेगा। जनगणना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें देश के सभी व्यक्तियों से संबंधित आंकड़े इकट्ठा किए जाते हैं। यह प्रक्रिया हर दस साल में एक बार होती है और इसमें जनसांख्यिकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक डेटा शामिल होते हैं। जनगणना के माध्यम से लोगों की संख्या, आयु, लिंग, शिक्षा, व्यवसाय और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी इकट्ठा की जाती है, जिसका उपयोग सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह आंकड़े नीति निर्माण, योजना और विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।

देश में आजादी के बाद यह पहली जातीय जनगणना होगी

बता दें कि केंद्र ने 30 अप्रैल 2025 को जातीय जनगणना कराने का एलान किया था। देश में आजादी के बाद यह पहली जातीय जनगणना होगी, जिसे मूल जनगणना के साथ ही कराया जाएगा। कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल जाति जनगणना कराने की मांग करते रहे हैं। पिछली जनगणना 2011 में हुई थी। इसे हर 10 साल में किया जाता है, लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण 2021 में टाल दिया गया था। जातिगत जनगणना की मांग लंबे समय से राजनीतिक और सामाजिक हलकों में उठ रही थी। विपक्षी दलों और कुछ सहयोगी दलों ने इसे सामाजिक न्याय और संसाधनों के उचित वितरण के लिए आवश्यक बताया है। यह गणना न केवल पिछड़े वर्गों की पहचान में मदद करेगी, बल्कि नीति निर्माण और आरक्षण की सीमा बढ़ाने जैसे मुद्दों पर भी प्रभाव डालेगी। हालांकि, सरकार ने अभी तक इसकी अंतिम पुष्टि नहीं की है, लेकिन तैयारियां जोर-शोर से शुरू हो चुकी हैं। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने 2023 में सबसे पहले जाति जनगणना की मांग की थी। इसके बाद वे देश-विदेश की कई सभाओं और फोरम पर केंद्र से जाति जनगणना कराने की मांग करते रहे हैं। वहीं केंद्रीय मंत्री वैष्णव ने कहा, '1947 से जाति जनगणना नहीं की गई। कांग्रेस की सरकारों ने हमेशा जाति जनगणना का विरोध किया। 2010 में दिवंगत डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा था कि जाति जनगणना के मामले पर कैबिनेट में विचार किया जाना चाहिए। इस विषय पर विचार करने के लिए मंत्रियों का एक समूह बनाया गया था। अधिकांश राजनीतिक दलों ने जाति जनगणना की सिफारिश की। इसके बावजूद कांग्रेस सरकार ने जाति का सर्वेक्षण या जाति जनगणना कराने का फैसला नहीं किया। जनगणना 2027 सिर्फ जनसंख्या की गणना भर नहीं होगी, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। वंचित वर्गों की सही पहचान और उनके लिए योजनाओं की बेहतर दिशा तय हो सकेगी। आरक्षण व्यवस्था और सामाजिक न्याय से जुड़े मुद्दों पर तथ्यात्मक और अद्यतन आंकड़े उपलब्ध होंगे। नीतियों और योजनाओं का पुनर्गठन संभव होगा जो समावेशी विकास की दिशा में उपयोगी हो सकता है। बता दें कि भारत की जनगणना जनगणना अधिनियम, 1948 और जनगणना नियम, 1990 के प्रावधानों के तहत की जाती है।

मोदी सरकार के 11 साल भारत की विरासत से विकास की बेहतरीन यात्राः डॉ. नरेश बंसल

डॉ. नरेश बंसल
माननीय राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष भाजपा एवं सांसद राज्यसभा

भाजपा राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष व सांसद राज्य सभा डॉ. नरेश बंसल ने आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के 11 साल पूरे होने पर हर्ष जताया है। डॉ. बंसल ने कहा कि, यह विकसित भारत के अमृतकाल में आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व सेवा, सुरक्षा, सुशासन और गरीब कल्याण के 11 साल रहे हैं। यह 11 साल में भारत की विरासत से विकास की बेहतरीन यात्रा है। डॉ. नरेश बंसल ने कहा कि, देश में 6 दशक बाद किसी प्रधानमंत्री ने अपने 2 कार्यकाल पूरा करके तीसरी बार सरकार बनायी है। प्रधानमंत्री मोदी की दूरदर्शी सोच और दूरगामी नीतियों ने पिछले एक दशक में भारत की तस्वीर बदल रख दी है। पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक देश में विकास की ऐसी चौतरफा बयार बही है कि, इसने शहरों और गांवों तक की खाई भी पाट कर रख दी है।

डॉ. नरेश बंसल ने कहा कि, 11 वर्षों का यह युग परिवर्तनकारी कालखंड भारत के आत्म गौरव, स्वाभिमान, सनातन और राष्ट्रीयता की भावना के पुर्नजागरण का ऐतिहासिक काल रहा है। जिसमें हमारा देश वैश्विक मंच पर एक सशक्त, सक्षम और सामर्थ राष्ट्र के रूप में विकसित हुआ है। आदरणीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 2.14 से प्रारंभ यह सेवा यात्रा भारतीय जनमानस की आकांक्षाओं को यथार्थ में बदलने की यात्रा रही है।

डॉ. नरेश बंसल ने कहा कि इस यात्रा में प्रधानमंत्री ने सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास के मूल मंत्र के साथ एकात्म मानववाद के सिद्धांत पर चलते हुए राष्ट्र प्रथम की भावना को आत्मसाथ करते हुए राष्ट्र के नवनिर्माण का मार्ग प्रशस्त किया है। इन 11 वर्षों में आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का फोकस गरीब, महिला, युवा और किसान के उत्थान पर रहा है। डॉ. नरेश बंसल ने कहा कि आज वोकल फॉर लोकल, मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलों के माध्यम से देश आत्मनिर्भर बनने की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। मोदी सरकार की जन-कल्याणकारी योजनाओं ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक राहत पहुंचाई है। इन 11 वर्षों में 25 करोड़ गरीबों को गरीब रेखा से ऊपर लाने में प्रधानमंत्री ने सफलता प्राप्त की है।

डॉ. नरेश बंसल ने कहा आज भारत के आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, हाई स्पीड ट्रेन व मेट्रो रेल नेटवर्क, विश्व स्तरीय एक्सप्रेसवे, रोड़ व हवाई नेटवर्क को देखकर हर देश चकित है। डॉ. नरेश बंसल ने कहा कि, प्रधानमंत्री के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में भारत की सांस्कृतिक यात्रा का पुनर्जन्म हुआ है। भारत से औपनिवेशिक सोच को हटाने का काम मोदी सरकार ने बेहतरीन तरीके से 11 वर्षों में किया है।

सपनों की उड़ान में जिंदगी का "दर्दनाक अंत"

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

गुजरात के दिल कहे जाने वाले अहमदाबाद में 12 जून को बोइंग 787 ड्रीमलाइनर प्लेन मौत का आखिरी टेकऑफ बन गया। 12 जून दोपहर तक अहमदाबाद शहर रफ्तार के साथ भाग रहा था। अहमदाबाद का सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई एयरपोर्ट से एअर इंडिया का बोइंग 787 ड्रीमलाइनर प्लेन लंदन जाने की तैयारी कर रहा था। विमान ने एयरपोर्ट से दोपहर 1:38 बजे पर लंदन जाने के लिए उड़ान भरी। चंद मिनटों बाद ही प्लेन बीजे मेडिकल कॉलेज हॉस्टल से टकराकर क्रैश हो गया। हादसे का खौफनाक मंजर देखकर पूरा देश हिल गया। यह कोई साधारण समाचार नहीं था बल्कि देशवासियों के लिए जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा हो। प्लेन में सवार 241 यात्रियों की जिंदा जलकर मौत हो गई। एक यात्री चमत्कारिक रूप से बच गया। वहीं मेडिकल हॉस्टल में मौजूद एमबीबीएस के छात्र समेत 30 लोगों की जान चली गई। शनिवार तक इस प्लेन हादसे में 270 लोगों की जान चली गई है। बोइंग 787 ड्रीमलाइनर पर सवार होकर कई लोगों ने खुशहाल जिंदगी की उम्मीदों के साथ सपनों की उड़ान भरी थी, लेकिन यह विमान उनके लिए काल साबित हुआ और पल भर में ही सारे अरमान राख हो गए। कोई अपने जीवनसाथी से मिलने वाला था, कोई बेटे बहू से मिलने वाला था, लेकिन इन लोगों की जिंदगी का दर्दनाक अंत हुआ। इनके परिवारों को इस दुर्घटना ने ऐसा जख्म दिया है जिसका दर्द वे जिंदगी भर महसूस करेंगे।

आमतौर पर एयरपोर्ट के आसपास विमानों का उड़ान भरना और उतरते हुए देखना लोगों के लिए रोमांच भरा रहता है। जब कोई प्लेन एयरपोर्ट के रनवे से उड़ान भरता है तो उसे 'टेकऑफ' कहा जाता है वहीं जब वह उतरता है तो उसे लैंडिंग कहते हैं। टेक ऑफ और लैंडिंग करते समय प्लेन में सवार यात्रियों के लिए भी खास पल रहते हैं। गुजरात के दिल कहे जाने वाले अहमदाबाद में गुरुवार, 12 जून की दोपहर बोइंग 787 ड्रीमलाइनर प्लेन मौत का आखिरी टेकऑफ बन गया। 12 जून दोपहर तक अहमदाबाद शहर रफ्तार के साथ भाग रहा था। अहमदाबाद का सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई एयरपोर्ट से एअर इंडिया का बोइंग 787 ड्रीमलाइनर प्लेन लंदन जाने की तैयारी कर रहा था। इस विमान ने एयरपोर्ट से दोपहर 1:38 पर लंदन जाने के लिए उड़ान भरी। चंद मिनटों बाद ही यह प्लेन क्रैश हो गया। हादसे का खौफनाक मंजर देखकर पूरा देश हिल गया। यह कोई साधारण समाचार नहीं था बल्कि देशवासियों के लिए जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा हो।

विमान हादसे में जिंदा बचे एकमात्र यात्री की देशभर में रही चर्चा

अहमदाबाद में एअर इंडिया के प्लेन क्रैश में बचे एकमात्र यात्री देशभर चर्चा में आ गए हैं। फिलहाल उनकी स्थिति सही है और अहमदाबाद के अस्पताल में भर्ती हैं। इनका नाम है भारतीय मूल के ब्रिटिश नागरिक विश्वास कुमार रमेश। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को अस्पताल में जाकर विश्वास कुमार से हादसे की जानकारी ली। विश्वास कुमार रमेश एकमात्र व्यक्ति हैं, जिनकी इस विमान हादसे में जान बची है। अब तक 241 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। विश्वास कुमार रमेश का फिलहाल अस्पताल में इलाज चल रहा है। बातचीत के दौरान विश्वास कुमार रमेश ने उस खौफनाक मंजर को बयां किया। विश्वास कुमार रमेश का कहना है कि सब कुछ मेरी आंखों के सामने हुआ। विश्वास कुमार ने कहा, मुझे खुद भरोसा नहीं होता कि मैं कैसे बाहर जिंदा निकला। क्योंकि कुछ टाइम के लिए मुझे भी लगा कि मैं मरने वाला हूं। जब मेरी आंख खुली तब एहसास हुआ मैं जिंदा हूं। मैंने दुर्घटना के बाद प्लेन से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढा। विश्वास कुमार ने कहा कि टेक ऑफ के एक मिनट बाद ही ऐसा लगा था कि प्लेन रुक गया है। कुछ ही सेकेंड में प्लेन के अंदर लाइट ऑन हो गई। स्पीड के साथ ही प्लेन हॉस्पिटल के हॉस्टल में घुस गया। मेरी तरह प्लेन का हिस्सा दीवार से सटा नहीं था, लेकिन उसका गेट टूट गया और उसी रास्ते से मैं बाहर निकलकर आया। मेरा बायां हाथ थोड़ा जल गया। बाद में एंबुलेंस से मुझे अस्पताल लाया गया। एयर इंडिया का विमान गुरुवार को दोपहर 1:38 बजे अहमदाबाद से लंदन के लिए रवाना हुआ था, जिसमें 230 यात्री और 12 क्रू सदस्य सवार थे। टेक ऑफ के कुछ मिनट बाद ही प्लेन क्रैश हो गया। अहमदाबाद एयरपोर्ट से कुछ दूरी पर प्लेन अस्पताल के हॉस्टल से टकराया और उसमें आग लग गई। वहीं केंद्र सरकार बोइंग ड्रीमलाइनर 787 विमान को उड़ान भरने से रोकने पर विचार कर रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक सिक्योरिटी रिव्यू के लिए विमानों को ग्राउंड किया जा सकता है। यह फैसला अहमदाबाद में हुए प्लेन क्रैश के बाद लिया गया है। बोइंग 787 ड्रीमलाइनर एक आधुनिक, मिड-साइज, ट्विन-इंजन, वाइड-बॉडी जेट विमान है, जिसे बोइंग ने बनाया है। ये लंबी दूरी की उड़ानों के लिए डिजाइन किया गया है और पुराने बोइंग 767 को रिप्लेस करने के लिए लाया गया। ये फ्यूल-एफिशिएंट विमान है।

12 जून की तारीख इतिहास के पन्नों में एक भयावह विमान त्रासदी के रूप में दर्ज हो गई। विमान में दो पायलट, क्रू मेंबर समेत 242 यात्री सवार थे। अहमदाबाद एयरपोर्ट से उड़ान भरने के दो मिनट बाद ही यह प्लेन हादसे का शिकार होकर बीजे मेडिकल कॉलेज हॉस्टल से टकरा गया। प्लेन में सवार 241 यात्रियों की जिंदा जलकर मौत हो गई। एक यात्री चमत्कारिक रूप से बच गया। वहीं मेडिकल हॉस्टल में मौजूद एमबीबीएस के छात्र समेत 30 लोगों की जान चली गई। शनिवार तक प्लेन हादसे में 270 लोगों की जान चली गई है। बोइंग 787 ड्रीमलाइनर पर सवार होकर कई लोगों ने खुशहाल जिंदगी की उम्मीदों के साथ सपनों की उड़ान भरी थी, लेकिन यह विमान उनके लिए काल साबित हुआ और पल भर में ही सारे अरमान राख हो गए। कोई अपने जीवनसाथी से मिलने वाला था, कोई बेटे बहू से मिलने वाला था, लेकिन इन लोगों की जिंदगी का दर्दनाक अंत हुआ। इनके परिवारों को इस दुर्घटना ने ऐसा जख्म दिया है जिसका दर्द वे जिंदगी भर महसूस करेंगे। वे अपने स्वजन का अंतिम दर्शन भी नहीं कर सकेंगे। डीएनए से इन पीड़ितों की पहचान होगी। यह विमान दुर्घटना के बाद अहमदाबाद से लंदन जा रहा एअर इंडिया का बोइंग ड्रीमलाइनर विमान अहमदाबाद हवाई अड्डे से उड़ान भरने के चंद मिनटों के भीतर ही एक मेडिकल कॉलेज के हास्टल के भवन से टकराते हुए मेस पर जा गिरा। प्लेन में सवार गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी जो कि लंदन जा रहे थे की दुखद मौत हो गई। हादसे की खबर सुनकर हर कोई स्तब्ध रह गया। विमान में सवार यात्रियों और चालक दल के सदस्यों के परिवारों के लिए यह खबर किसी बड़े झटके से कम नहीं थी। किसी ने बेटी तो किसी ने बेटा तो किसी पिता खोया। इन सभी यात्रियों को नहीं मालूम था अगले पल क्या होने वाला है और यह उनका अंतिम सफर होगा। इस प्लेन में पूर्व सीएम विजय रूपाणी के अलावा कई बिजनेस टायकून भी सवार थे। इनमें कार्गो मोटर के प्रमुख नंदा और ल्यूबी के डायरेक्टर सुभाष अमीन भी शामिल थे। प्लेन क्रैश होने के बाद हादसे के शिकार लोगों को इलाज के लिए सिविल अस्पताल लाया गया। अस्पताल में स्ट्रेचर कम पड़े तो हाथ ठेले से शवों को ले जाया गया। हादसे का वीडियो दिल को दहला गया। विमान में 242 पैसेंजर सवार थे। इनमें 53 ब्रिटिश, 7 पुर्तगाली और एक कनाडाई नागरिक था। ज्यादातर शव इतनी बुरी तरह झुलस चुके थे कि उनकी पहचान डीएनए टेस्ट के बाद ही संभव होगी। प्लेन में सवार यात्रियों के सगे संबंधी अहमदाबाद के अस्पतालों में बड़ी उम्मीद लेकर पहुंचे लेकिन सभी को निराशा हुई। गुरुवार शाम को ही केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह भी अहमदाबाद पहुंचे। शुक्रवार सुबह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अहमदाबाद पहुंचे और अस्पतालों में घायलों से मिले। बोइंग का 787 ड्रीमलाइनर विमान अपनी फ्यूल एफिशिएंसी और आरामदायक सफर के लिए जाना जाता है। हालांकि इसकी सफ्टी को लेकर लगातार सवाल उठते रहे हैं। इसमें खामियां सामने आने के बाद दुनियाभर में इसकी फ्लीट के उड़ान भरने पर 3 महीने

सीएम धामी ने विमान हादसे में मारे गए यात्रियों को दी श्रद्धांजलि

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री आवास में उच्च अधिकारियों के साथ बैठक के दौरान गुजरात के अहमदाबाद में हुए विमान हादसे में जान गंवाने वालों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने मौन रखकर दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं भी व्यक्ति की। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह हादसा देश और विश्व के लिए अत्यंत दु:खद एवं पीड़ादायक है। राज्य सरकार की संवेदनाएं इस दु:ख की घड़ी में मृतकों के परिवारजनों के साथ है। अहमदाबाद विमान हादसे में मारे गए लोगों के लिए बीजेपी प्रदेश कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट, प्रदेश प्रभारी दुष्यंत गौतम समेत भाजपा के कई वरिष्ठ कार्यकर्ता मौजूद रहे। जिन्होंने हादसे में मारे गए सभी लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान 2 मिनट का मौन रखकर सभी मृत लोगों की आत्मा की शांति की प्रार्थना की गई। वहीं इंटरनेशनल गुडविल सोसायटी ऑफ इंडिया के सभी सदस्य, अहमदाबाद में हुई हवाई जहाज की भयंकर दुर्घटना में यात्रियों की दुखद मृत्यु पर गहन दुख प्रकट किया। सोसाइटी के राष्ट्रीय महासचिव डॉ आर के भटनागर ने कहा कि परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं की पुण्य आत्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें एवं उनके परिवार के सदस्यों को इस गहन दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

के लिए रोक लगा दी गई थी। यह विमान त्रासदी के रूप में इतिहास के काले पन्नों में दर्ज हो गया। विमान हादसे पर शनिवार को सिविल एविएशन मिनिस्टर के राममोहन नायडू ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने बताया कि पहले दिन से हादसे की जांच जारी है। केंद्रीय गृह सचिव के नेतृत्व में जांच कमेटी गठित की गई है। जो तीन महीने में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। लेकिन 270 नागरिकों की मौत का जिम्मेदार कौन है फिलहाल जांच का विषय है? लेकिन जिन्होंने अपनों को खोया है वो जीवन भर यह दर्द कभी नहीं भूल पाएंगे।

पीएम मोदी समेत विश्व भर के तमाम नेताओं ने जताया शोक

अहमदाबाद प्लेन क्रैश पर भाजपा नेताओं के साथ विपक्ष के सभी नेताओं ने गहरा शोक जताया। पीएम मोदी ने शुक्रवार को अहमदाबाद विमान हादसे वाली जगह और अस्पताल का दौरा करने के बाद सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म 'एक्स' पर एक पोस्ट किया है। पीएम ने लिखा, अहमदाबाद में हुए विमान हादसे से हम सभी स्तब्ध हैं। इतने सारे लोगों की अचानक और हृदय विदारक तरीके से हुई मौत को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। सभी शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना। हम उनके दर्द को समझते हैं और यह भी जानते हैं कि उनके पीछे जो खालीपन रह गया है, वह आने वाले कई सालों तक महसूस किया जाएगा। वहीं ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने इस दुर्घटना को विनाशकारी दृश्य बताते हुए गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, अहमदाबाद से लंदन जा रहे विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने की खबर बेहद दुखद है। इस विमान में कई ब्रिटिश नागरिक सवार थे। मैं लगातार स्थिति की जानकारी ले रहा हूं। मेरी संवेदनाएं पीड़ितों और उनके परिजनों के साथ हैं। विमान में कम से कम 169 भारतीय और 53 ब्रिटिश नागरिक सवार थे और यह लंदन जा रहा था। विमान में ब्रिटेन के रक्षा मंत्री डेविड लैमी ने भी हादसे पर गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा, अहमदाबाद में हुए इस भीषण विमान हादसे की खबर से बेहद दुखी हूं। सभी प्रभावित लोगों के साथ मेरी संवेदनाएं हैं। यूके सरकार स्थानीय भारतीय अधिकारियों के साथ मिलकर तथ्य जुटाने और सहायता पहुंचाने में जुटी है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने भी इस दुखद हादसे पर गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा, भारत में हुए यात्री विमान हादसे की भयावह खबर मिली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत की जनता के प्रति मेरी गहरी संवेदना। हम भारत, यूके, पुर्तगाल और कनाडा के पीड़ितों के साथ हैं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। भारत में रूस के राजदूत डेनिस अलिपोव ने भी हादसे को 'भीषण त्रासदी' बताया और कहा, अहमदाबाद से दिल दहला देने वाली खबर आ रही है। पीड़ितों के परिजनों, भारत की जनता और सरकार के प्रति मेरी गहरी संवेदना है।

फ्लाइट का ब्लैक बॉक्स मिला, पता चल सकेगा क्रैश होने से पहले आखिरी पलों में क्या हुआ

अहमदाबाद में गुरुवार को हुए एअर इंडिया फ्लाइट हादसे के बाद शुक्रवार को एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो ने ब्लैक बॉक्स को खोज लिया है। यह हॉस्टल की छत पर मिला। इसके जरिए पता चल सकेगा कि क्रैश होने के पहले आखिरी पलों में क्या हुआ था। विमान का ब्लैक बॉक्स और डीवीआर बरामद कर लिया गया है। अब घटना के पीछे की मुख्य वजह तक पहुंचने में आसानी हो सकेगी। इस बीच डीजीसीए ने एयर इंडिया के बोइंग 787 और 787-9 बेड़े के गहन सुरक्षा निरीक्षण के निर्देश दिए हैं। डीजीसीए ने ये फैसला अहमदाबाद में हुए भयानक हादसे के बाद लिया है। इस विमान हादसे ने पूरी दुनिया में एक हलचल पैदा कर दी है। शुक्रवार को गुजरात के आतंकवाद निरोधक दस्ते ने अहमदाबाद एअरपोर्ट के पास दुर्घटनाग्रस्त हुए एअर इंडिया के विमान के मलबे से डिजिटल वीडियो रिकॉर्डर बरामद कर लिया। इसके साथ ही बीजे मेडिकल कॉलेज की छत से ब्लैक बॉक्स भी बरामद कर लिया है। डीजीसीए ने निर्देश दिया है कि अगले आदेश तक 'फ्लाइट कंट्रोल निरीक्षण' को ट्रांजिट निरीक्षणों में शामिल किया जाए। पावर एश्योरेंस जांच दो सप्ताह के भीतर पूरी की जानी चाहिए, और एयर इंडिया को पिछले 15 दिनों में देखी गई किसी भी बार-बार आने वाली मेंटेनेंस समस्याओं को तुरंत समाधान करना होगा। इन सभी जांचों की रिपोर्ट और निष्कर्ष डीजीसीए को आगे की समीक्षा के लिए पेश किया

प्लेन में सवार गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी जो कि लंदन जा रहे थे की दुखद मौत हो गई

जाना चाहिए। यह निर्देश सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से जारी किया गया है ताकि परिचालन सुरक्षा को और बेहतर बनाया जा सके। मृतकों की पहचान के लिए उनके परिजन के डीएनए टेस्ट लिए जा रहे हैं। रेक्स्यू टीम ने 270 लोगों के शव बरामद कर लिए हैं।

विमान के एक कोने में रखे छोटे से बॉक्स को ब्लैक बॉक्स कहा जाता है

बता दें कि विमान के एक कोने में रखे छोटे से बॉक्स को ब्लैक बॉक्स कहा जाता है। यह एक छोटी मशीन होती है जो उड़ान के दौरान विमान के बारे में जानकारी रिकॉर्ड करती है। ब्लैक बॉक्स मुख्य रूप से फ्लाइट रिकॉर्डर है। इसमें दो उपकरण होते हैं - कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर (सीवीआर) और फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर (एफडीआर)। सीवीआर रेडियो प्रसारण और पायलट की आवाज और इंजन की आवाज जैसी आवाजें रिकॉर्ड करता है। इसके जरिये जांच अधिकारी इंजन की गति और अन्य सिस्टम में खामी का पता लगा सकते हैं। ब्लैक बॉक्स स्टील या टाइटेनियम जैसे मजबूत पदार्थों से बना होता है। यह भीषण आग में भी सुरक्षित रहता है। ब्लैक बॉक्स को विमान के पिछले हिस्से की ओर रखा जाता है, जहां दुर्घटना का प्रभाव आमतौर पर सबसे कम होता है। यह नारंगी या पीले रंग का आयताकार बॉक्स विस्फोट, आग, पानी के दबाव और तेज गति से होने वाली दुर्घटनाओं को झेल सकता है। विमान में लगे दोनों ब्लैक बॉक्स- सीवीआर और एफडीआर उड़ान के बारे में जानकारी रिकॉर्ड करते हैं। इससे विमान दुर्घटना को फिर से रोकने में मदद मिलती है। सीवीआर रेडियो प्रसारण और कॉकपिट में अन्य आवाज को रिकॉर्ड करता है, जिसमें पायलटों के बीच बातचीत और इंजन की ध्वनि शामिल हैं। जबकि एफडीआर जहाज से संबंधित 80 से अधिक विभिन्न प्रकार की जानकारी रिकॉर्ड करता है, जैसे ऊंचाई, हवा की गति, उड़ान की दिशा, ऑटोपायलट स्थिति आदि। ब्लैक बॉक्स का आविष्कार 1950 के दशक में हुआ था। ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिक डेविड वॉरेन ने 1953 में दुनिया के पहले वाणिज्यिक जेट एयरलाइनर कॉमेट की दुर्घटना की जांच कर रहे थे। उस समय उन्हें कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर बनाने का विचार आया। उनका मानना था कि कॉकपिट में आवाज की रिकॉर्डिंग विमान दुर्घटना की जांच में मद्दगार होगी। वॉरेन ने 1956 में एक प्रोटोटाइप डिजाइन बनाया। लेकिन अधिकारियों को यह समझने में कई साल लग गए कि यह डिवाइस कितनी मूल्यवान हो सकती है और उन्हें दुनिया भर में वाणिज्यिक एयरलाइनों में लगाना शुरू किया।

विमान की कमान कैप्टन सुमीत सभरवाल के पास थी, उनके साथ फर्स्ट ऑफिसर क्लाइव कुंदर थे

अहमदाबाद में क्रैश हुए विमान की कमान कैप्टन सुमीत सभरवाल के पास थी, उनके साथ फर्स्ट ऑफिसर क्लाइव कुंदर थे। कैप्टन सुमीत सभरवाल एलटीसी हैं, जिन्हें 8,200 घंटों का अनुभव है। सह-पायलट को 1100 घंटों का उड़ान अनुभव था। विमान ने सरदार वल्लभभाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के रनवे 23 से दोपहर 1.38 बजे उड़ान भरी। उड़ान भरने के कुछ ही क्षणों बाद एक मे-डे कॉल जारी किया गया था, लेकिन कॉकपिट से कोई और संचार प्राप्त नहीं हुआ। अहमदाबाद से लंदन गैटविक के लिए उड़ान भरने वाले बोइंग 787-8 विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के विशिष्ट कारणों का पता विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) द्वारा विस्तृत जांच पूरी होने के बाद ही चलेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि अहमदाबाद से लंदन जा रहे एअर इंडिया के विमान के हादसे का शिकार होने का संभावित कारण दोनों इंजनों का फेल होना या उड़ान भरने के तुरंत बाद पक्षी का टकरा जाना हो सकता है। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि शवों की पहचान के लिए डीएनए टेस्ट किए जाएंगे। गुजरात के पास इतनी बड़ी संख्या में टेस्ट की कैपेसिटी है। एअर इंडिया का जो प्लेन अहमदाबाद में क्रैश हुआ है, उसमें 1.25 लाख लीटर ईंधन था। जिसके कारण दुर्घटनाग्रस्त विमान के अंदर और आसपास का तापमान लगभग 1,000 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया, जिससे बचाव अभियान बेहद मुश्किल हो गया। दमकल विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, ''जैसे ही (विमान का ईंधन) टैंक फटा, आग की लपटें उठने लगीं और कुछ ही समय में तापमान 1,000 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। इससे किसी के लिए बचने की कोई गुंजाइश नहीं रही। ''लंदन जाने वाले एयर इंडिया के 'बोइंग 787' विमान में जीई का ही इंजन लगा हुआ था। साथ ही नागरिक विमानन दुर्घटनाओं की जांच करने वाली अमेरिका की सरकारी एजेंसी ने कहा कि वह अहमदाबाद में हुए विमान हादसे की जांच में सहायता के लिए अमेरिकी जांचकर्ताओं की एक टीम भारत भेजेगी।'' ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टार्मर ने कहा कि जांच के तहत ब्रिटेन का एक दल भारत भेजा गया है। असैन्य विमान दुर्घटनाओं और गंभीर घटनाओं की जांच करने वाली एक ब्रिटिश एजेंसी ने कहा कि वह दुर्घटना की भारतीय नेतृत्व वाली जांच में सहयोग के लिए एक बहु-विषयक जांच दल भारत में तैनात करेगी।

हादसे के बाद का खौफनाक मंजर

चार धाम में अभी तक पहुंचे 27 लाख से अधिक श्रद्धालु

उत्तराखंड में 30 अप्रैल से चार धाम यात्रा की शुरुआत हुई थी। उसी दिन यमुनोत्री और गंगोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोले गए थे। जबकि 2 मई को बाबा केदारनाथ धाम के कपाट खुले। बद्रीनाथ धाम के कपाट 4 मई को श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए थे। यात्रा शुरू होने से अब तक 42 दिन के अंदर चारों धामों में 27 लाख 62 हजार श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच चुके हैं। तीर्थयात्रियों की लगातार बढ़ती संख्या को देखते हुए प्रशासन अलर्ट मोड में है। राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन ने यात्रा मार्गों पर सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाएं और ट्रैफिक मैनेजमेंट को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए हैं। स्वास्थ्य जांच शिविरों की संख्या बढ़ाई जा रही है और सभी पड़ावों पर डॉक्टरों की तैनाती सुनिश्चित की जा रही है। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे पहाड़ी यात्रा के दौरान अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखें, नियमित जांच कराएं और मौसम और स्वास्थ्य की स्थिति को देखते हुए यात्रा करें।

इस बार चार धाम यात्रा नया रिकार्ड बनाने जा रही है। डेढ़ महीने पहले शुरू हुई यात्रा में तीर्थ यात्रियों का उत्साह चरम पर है। अभी तक 27 लाख 62 हजार से ज्यादा श्रद्धालु पहुंच चुके हैं। उत्तराखंड में 30 अप्रैल से चार धाम यात्रा की शुरुआत हुई थी। 30 अप्रैल को यमुनोत्री और गंगोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोले गए थे। जबकि 2 मई को बाबा केदारनाथ धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खुले थे। बद्रीनाथ धाम के कपाट 4 मई को श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए थे। यात्रा शुरू होने से अब तक 42 दिन के अंदर चारों धामों में 27 लाख 62 हजार श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच चुके हैं। इनमें सबसे ज्यादा संख्या बाबा केदारनाथ धाम में है। केदारनाथ धाम में श्रद्धालुओं की संख्या का आंकड़ा एक दिन में 20 हजार से ऊपर पहुंच रहा है। वहीं 25 मई से शुरू हुई सिखों के पवित्र धाम हेमकुंड साहिब की यात्रा में भी काफी उत्साह देखा जा रहा है। बड़ी संख्या में श्रद्धालु हेमकुंड साहिब के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। भारी बर्फबारी के बीच में श्रद्धालु लगातार हेमकुंड साहिब की यात्रा पर आ रहे हैं। हेमकुंड साहिब में अब तक 95,660 श्रद्धालुओं ने दर्शन किए हैं। 12 जून को 6826 श्रद्धालु हेमकुंड साहिब की यात्रा पर पहुंचे। तीर्थयात्रियों की लगातार बढ़ती संख्या को देखते हुए प्रशासन अलर्ट मोड में है। राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन ने यात्रा मार्गों पर सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाएं और ट्रैफिक मैनेजमेंट को सुदृढ़ करने के निर्देश दिए हैं। स्वास्थ्य जांच शिविरों की संख्या बढ़ाई जा रही है और सभी पड़ावों पर डॉक्टरों की तैनाती सुनिश्चित की जा रही है। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे पहाड़ी यात्रा के दौरान अपनी सेहत का विशेष ध्यान रखें, नियमित जांच कराएं और मौसम और स्वास्थ्य की स्थिति को देखते हुए यात्रा करें।

चार धाम यात्रा मार्ग पर 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं की स्वास्थ्य की जांच की गईः *डॉ. आर राजेश कुमार*

उत्तराखण्ड स्वास्थ्य विभाग ने चारधाम यात्रा 2025 के दौरान संभावित स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने के लिए व्यापक तैयारियां की हैं। स्वास्थ्य सचिव डॉ. आर. राजेश कुमार ने बताया कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देशन में स्वास्थ्य विभाग ने यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य सेवाओं की ऐसी प्रभावशाली व्यवस्था की है, जिसके तहत अब तक 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं की स्वास्थ्य जांच (स्क्रीनिंग) की जा चुकी है। स्वास्थ्य सचिव ने बताया कि चारधाम यात्रा में प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु शामिल होते हैं, जिनमें बड़ी संख्या में वृद्ध, हृदय व सांस रोगियों के अलावा पहाड़ी क्षेत्र में पहली बार आने वाले लोग भी होते हैं। इनके लिए ऊंचाई, ठंड और ऑक्सीजन की कमी स्वास्थ्य संबंधी गंभीर जोखिम बन सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए इस बार स्वास्थ्य सेवाओं को त्रिस्तरीय स्तर पर सशक्त बनाया गया है। डॉ. आर. राजेश कुमार ने बताया कि राज्य सरकार तकनीक, विशेषज्ञता और मानव संसाधन तीनों पर समांतर रूप से कार्य कर रही है। रुद्रप्रयाग, चमोली और उत्तरकाशी जैसे चारधाम जिलों में इस बार 49 स्थायी स्वास्थ्य केंद्र और 20 मेडिकल रिलीफ पोस्ट को सक्रिय किया गया है। ट्रांजिट जिलों-हरिद्वार, देहरादून, टिहरी और पौड़ी में भी मजबूत स्वास्थ्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। यात्रा प्रारंभ बिंदुओं पर 57 स्क्रीनिंग कियोस्क लगाए गए हैं, जिनमें हरिद्वार और ऋषिकेश में 2-2, विकासनगर में 2 और पौड़ी के कालियासौड़ में 1 नया स्क्रीनिंग सेंटर जोड़ा गया है।

केदारनाथ धाम में श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु इस बार एक 17 बेड का नया अस्पताल भी सेवा में लाया गया है। 31 विशेषज्ञ डॉक्टर, 200 मेडिकल ऑफिसर, 381 पारा-मेडिकल स्टाफ यात्रा मार्ग पर तैनात किए गए हैं। इसके अलावा प्रति रोस्टर 24 अतिरिक्त मेडिकल ऑफिसर (कुल 336) 35 पारा-मेडिकल स्टाफ (कुल 420) भी शामिल हैं। विशेषज्ञ डॉक्टरों की तैनाती में

47 विशेषज्ञ राज्य स्वास्थ्य सेवा से, 13 विशेषज्ञ भारत सरकार से, और 5 विशेषज्ञ निजी मेडिकल कॉलेजों से लिए गए हैं। अब तक की गई स्क्रीनिंग में कई श्रद्धालु हाई ब्लड प्रेशर, सांस संबंधी समस्याएं या अन्य स्वास्थ्य स्थितियों से ग्रस्त पाए गए हैं। करीब 29 श्रद्धालुओं को आगे यात्रा न करने की सलाह देकर उन्हें सुरक्षा के दृष्टिकोण से वापस भेजा गया। वहीं, 369 श्रद्धालुओं को एंबुलेंस से और 33 को हेली एंबुलेंस सेवा से रेफर कर इलाज के लिए भेजा गया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर स्वास्थ्य विभाग ने केवल मेडिकल स्टाफ ही नहीं, बल्कि होटल, धर्मशाला स्टाफ, खच्चर चालकों और कुलियों को भी प्रशिक्षित किया है ताकि वे हाई रिस्क लक्षणों को पहचान सकें और समय पर रेफरल सुनिश्चित कर सकें। साथ ही, हाइपोथर्मिया जैसे जोखिम से बचाव हेतु भी विशेष जागरूकता अभियान चलाया गया है। 'ई-स्वास्थ्यधाम' पोर्टल के माध्यम से स्वास्थ्य डेटा की निगरानी और आपात स्थिति की त्वरित प्रतिक्रिया संभव हो पाई है। इसके लिए चारधाम जिलों को 50 टैबलेट दिए गए हैं जिससे सभी स्क्रीनिंग और मेडिकल रिलीफ पोस्ट पर डेटा डिजिटल रूप से संकलित हो रहा है। 13 भाषाओं में तैयार पर्चे, होर्डिंग्स और जानकारी संबंधित आईईसी सामग्री को स्क्रीनिंग प्वाइंट्स और होटलों में वितरित किया गया है ताकि हर राज्य से आने वाले तीर्थयात्री जानकारी से लाभान्वित हो सकें। यात्रा मार्ग पर 154 एंबुलेंस तैनात हैं, जिनमें 82 स्वास्थ्य विभाग की और 72 '108 एनएएस' सेवा की एंबुलेंस हैं। इस वर्ष पहली बार हेली एंबुलेंस सेवा को भी जोड़ते हुए इसे एम्स ऋषिकेश के सहयोग से संचालित किया जा रहा है, जिससे अत्यधिक गंभीर मरीजों को तुरंत विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा मिल सके।

गर्मियों की छुट्टियां व पहाड़

अमित कुमार नेगी
गणित अध्यापक
उत्तराखंड शिक्षा विभाग

गर्मियों की छुट्टियां अक्सर मजबुरी में या सुविधाओं की खोज में पलायन कर चुके लोगों को अपने मूल निवास स्थान की याद दिला देती है। खासकर उत्तराखंड के सुंदर पहाड़ो की वादियों से पलायन कर चुके लोगों के लिए यह एक ऐसा अवसर होता है जिससे वह अपने पैतृक गांव की यात्रा कर पाते है। सुख सुविधाओं के लिए पलायन कर चुके सभी लोग वास्तविक सुकून तथा शांति की खोज में चले आते है वापस अपने विरान पड़े पहाड़ो में जहाँ सुबह-सुबह चिड़ियो की चहकने की आवाज, चमकते पहाड़ो पर मिठी सी धूप और सुंदर वादियों की ठंडी हवा सबका मन मोह देती है और उनके दैनिक दिनचर्या में गाड़ियों की असहनीय ध्वनि और प्रदूषण के कारण शून्य दृश्यता का स्थान लेती है। बन्द कमरों में कैद बच्चों की जिंदगी तो पहाड़ो में आते ही ऐसे स्वतंत्र हो जाती है जैसे तिहाड़ जेल से कैदी भाग आये हो। जैसे ही सभी लोग गाँव में अपने लहलहाते खेतों में पहुँचते है तो मनमोहक मिट्टी की खुशबू और सभी जनों का खेतों में हँसते खेलते काम करना शहर के लोगों को उनके ऑफिस में अपने से ऊपर वालों की डाँट की याद दिलाते है। शाम को शहरों के पार्को में घूमने वाले लोग और सोशल मीडिया से बंधे लोग जब अपने गाँव मे लोगो के घर जाते है तो लोगो के साथ खुब वास्तविक बातों और जीवन के पहलुओं की गहनता को समझकर आनंदित महसूस करते है। रात को सब लोग जब आपस मे मिलकर पहाड़ी व्यंजनों जैसे मंडुवे की रोटी, भट की कफली, खेतों की हरी सब्जी और अपने पेड़ो से निकले शुद्ध फलो का आनन्द लेते है तो सभी को धूल मिट्टी व मक्खियों से सने हुए पिजा, बर्गर, चाऊमीन और मोमो की याद आ जाती है।

वह पहाड़ो का सुकून ही है जिस कारण वे लोग जो मध्य रात्रि 12 बजे 1 बजे सोने के लिए मजबूर होते है गाँव मे वह भी इस समय तक मधुर सपनों के साथ आनन्दमय नींद ले रहे होते है।

इन सुंदर पहाड़ो का मौसम सबको याद दिला देता है कि मानव निर्मित ऐसी कितना भी महँगा क्यों ना हो लेकिन हमारे पहाड़ो की शुद्ध हवा के सामने अस्तित्व हीन है। जब भी छुट्टियों के दिन पूरे होने को आते है तो ऐसे सुंदर तथा मनमोहक जगह से कोई जाना नही चाहता लेकिन सबकी मजबूरी उन्हें फिर से इन खूबसूरत वादियों को अलविदा कहने के लिए मजबूर कर देती है। और सबके लफ्ज़ो से एक ही वाक्य सुनने को मिलता है 'सच मे स्वर्ग है मेरे पहाड़.. काश हम भी यहीं रह पाते...'। अंत मे आपको कुछ स्वनिर्मित पंक्तियों के साथ छोड़कर जा रहा हूँ..

जिदंगी की दौड़ मे, सुविधाओं की खोज मे।
अपनो को छोड़ चले हम, अनजाने शहर मे।
प्रकृति की गोद मे, गए हम गर्मियों की छुट्टियों मे।
कही बेखभर न हो जाय मेरे सुंदर पहाड़
पलायन की होड़ मे।।

पति की जान की दुश्मन बनती नई नवेली दुल्हनें!

डॉ श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

एक जमाना था जब शादी के बाद दुल्हनों को ससुराल में कभी दहेज के लिए तो कभी अन्य कारण ों से प्रताड़ित किया जाता था, लेकिन अब हालात विपरीत हो गए है, अब नई नवेली दुल्हनें अपने ही सुहाग को निपटाने में लगी है। ऐसी एक नही अनेक घटनाएं हो गई है, जिनमे पत्नियों ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर या फिर खुद ही क्रूरता की हदे पार कर अपनी ही पति को मौत के घाट उतार दिया है। हाल ही में मेघालय में राजा रघुवंशी की हत्या का खुलासा हो गया है। राजा की पत्नी सोनम ने ही अपने प्रेमी राज कुशवाह के साथ मिलकर पति की हत्या की योजना तैयार की थी। शादी से पहले सोनम और राज के बीच प्रेम प्रसंग चल रहा था। राज इंदौर में सोनम के पिता की प्लाईवुड फैक्ट्री में काम करता था, जहां दोनों की मुलाकात हुई और प्रेम प्रसंग शुरू हुआ। सोनम उम्र में राज से 5 साल बड़ी है। पुलिस के मुताबिक, सोनम के कहने पर राज ने राजा की हत्या की साजिश रची और भाड़े के हत्यारो को सुपारी दी गई।

राजा की पत्नी यानी सोनम रघुवंशी वारदात वाली जगह पर मौजूद थी और उन्होंने अपने पति को मरते हुए देखा। 'सभी चार आरोपियों ने राजा रघुवंशी की हत्या करने की बात कबूल की है। पहला वार विशाल उर्फ विक्की ठाकुर ने किया था।' पूछताछ के दौरान आरोपियों ने बताया कि उन्होंने कैसे राजा रघुवंशी पर हमला किया और बाद में उसकी लाश को एक गहरी खाई में फेंक दिया।

क्राइम ब्रांच की जांच के अनुसार, तीन आरोपी विशाल, आकाश और आनंद ट्रेन से इंदौर से चले थे। वे कई ट्रेनों को बदलते हुए पहले गुवाहाटी और फिर शिलॉन्ग पहुंचे, एसीपी यादव ने बताया सोनम का प्रेमी और सह-साजिशकर्ता राज कुशवाहा इंदौर में ही रुका रहा लेकिन उसने तीनों को यात्रा खर्च के लिए 40,000-50,000 रुपये दिए गए थे।

आरोपियों ने पुलिस को बताया कि राजा की हत्या के समय सोनम मौके पर मौजूद थीं और उन्होंने सब कुछ देखा, इधर सोनम शिलॉन्ग पहुंच चुकी है। अब उससे राजा की हत्या का राज उगलवाया जाएगा। सोनम को लगा था कि उसके भाड़े पर के किलर और प्रेमी राज कभी सोनम का सच सामने नहीं आने देंगे। मगर पुलिस की मार पड़ते ही चारों आरोपियों ने न केवल अपना जुर्म कबूला, बल्कि यह भी कह दिया कि सोनम ने कैसे अपनी आंखों के सामने अपने पति को मरवाया। मेघालय पुलिस के 'ऑपरेशन हनीमून' ने इस साजिश की कई परतें उजागर की हैं, जिसमें सोनम की हत्या के समय मौके पर मौजूदगी, सुपारी किलरों के साथ उनकी मुलाकात, और जांच को भटकाने की कोशिशें शामिल हैं। इस मामले में कई चौंकाने वाले अपडेट्स सामने आए, जिन्होंने इस हत्याकांड की क्रूरता और साजिश की गहराई को और स्पष्ट किया है। सोनम अब भी यही दावा कर रही है कि उसे अगवा किया गया था, हालांकि पुलिस ने उसके दावे को खारिज कर दिया है। वहीं इस मामले में गिरफ्तार अन्य आरोपियों के कबूलनामे ने सनसनी मचा दी है।

राजा रघुवंशी हत्याकांड में गिरफ्तार चार आरोपियों राज कुशवाहा, आकाश राजपूत, विशाल सिंह चौहान, और आनंद कुर्मी ने मर्डर का जुर्म स्वीकार कर लिया है। इंदौर क्राइम ब्रांच की सहायक पुलिस आयुक्त पूनम चंद यादव ने यह जानकारी दी है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि इन आरोपियों ने यह भी बताया कि हत्या के समय सोनम रघुवंशी भी वेई सॉडोंग झरने के पास मौजूद थी और उसने अपने पति राजा को मरते हुए देखा था।

आरोपियों ने खुलासा किया कि सोनम ने राजा की हत्या से पहले चिल्लाकर कहा, 'मार दो इसे' और हत्या के बाद राजा के शव को खाई में धक्का देने में उनकी मदद की। सोनम ने राजा की हत्या को लूट का रूप देने की योजना बनाई थी। वह कुछ समय तक विधवा बनकर रहना चाहती थी, फिर अपने परिवार को राज कुशवाहा से शादी के लिए मनाने की कोशिश करती।

पुलिस ने 39 सीसीटीवी फुटेज की जांच की, जिसमें सोनम और तीनों सुपारी किलर शिलॉन्ग और गुवाहाटी के होटलों में दिखे। हत्या में इस्तेमाल हथियार गुवाहाटी के एक होटल के बाहर की दुकान से खरीदा गया था।

सोनम और राज कुशवाहा की मुलाकात दो

साल पहले हुई थी। राज, जो सोनम के भाई की टाइल कंपनी में काम करता था, सोनम को 'दीदी' कहकर बुलाता था ताकि किसी को शक न हो, वहीं इन दोनों ने हत्या की योजना शादी के तीन दिन बाद बनाई गई।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने इस घटना को समाज के लिए सबक बताते हुए कहा, 'यह बहुत दुखद है। शादी में दो परिवारों के बीच सावधानी बरतनी चाहिए। बच्चों को इतनी दूर भेजने पर भी विचार करना चाहिए।'

राजा रघुवंशी हत्याकांड ने न सिर्फ इंदौर और मेघालय, बल्कि पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। सोनम रघुवंशी की गिरफ्तारी और आरोपियों के कबूलनामे ने इस साजिश की क्रूरता को उजागर किया है। मेघालय पुलिस की तेजी और साक्ष्यों ने इस मामले को लगभग सुलझा लिया है, लेकिन सोनम के पिता के दावे और सीबीआई जांच की मांग इस केस में नए मोड़ ला सकते हैं।

इससे पहले भी कई ऐसे प्रेम प्रसंग के मामले सामने आ चुके है, जिनमें शादी के बाद पत्नी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर पति की हत्या की या कराई है।

अप्रैल के महीने में उत्तर प्रदेश के देवरिया में एक महिला ने अपने प्रेमी की मदद से अपने पति की हत्या कर दी और शव को दो टुकड़ों में काटकर ट्रॉली बैग में भरकर ठिकाने लगाने की कोशिश की। 38 वर्षीय नौशाद अहमद 10 दिन पहले ही दुबई से लौटा था, मईल थाना क्षेत्र के भटौली गांव में उसके घर से करीब 55 किलोमीटर दूर तरकुलवा थाना क्षेत्र के एक खेत में उसका शव मिला। मेरठ के सौरभ हत्याकांड में भी ऐसा ही हुआ था। 3 मार्च को मुस्कान ने अपने प्रेमी साहिल के साथ मिलकर सौरभ की हत्या कर दी। उसने शव के टुकड़े करके नीले ड्रम में सीमेंट के साथ बंद कर दिया गया था, इसके बाद दोनों घूमने निकल गए, जब वे लौटे, तब इस हत्या का खुलासा हुआ। तब से मुस्कान और साहिल दोनों सलाखों के पीछे हैं। इसी तरह मेरठ में अमित कुमार की हत्या उसकी पत्नी रविता ने अपने प्रेमी अमरदीप के साथ मिलकर की। हत्या को हादसा दिखाने के लिए रविता ने अमित के शव के पास सांप रख दिया और कहा कि उसकी मौत सांप के काटने से हुई है। लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सच छिप न सका, जांच में पता चला कि रविता और अमरदीप ने मिलकर अमित की गला घोंटकर हत्या की थी। वही अप्रैल माह में बिजनौर के फारूक की हत्या कर दी गई। फारूक सऊदी में काम करता था और गांव लौटा था। उसे पता चला कि उसकी पत्नी अमरीन का गांव के मेहरबान से प्रेम प्रसंग है। फारूक ने अमरीन की पिटाई की, जिससे नाराज होकर अमरीन ने मेहरबान के साथ मिलकर उसे मारने की साजिश रची, जिस पर मेहरबान और उसके साथी उमर ने फारूक को गोली मार कर उसकी हत्या कर दी। इन घटनाओं से अब पति भी डरे हुए है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार है)

उत्तराखंड सचिवालय के देवेंद्र शास्त्री भवन में संस्कृत संभाषण शिविर का हुआ समापन समारोह

उत्तराखंड संस्कृत शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित संस्कृत संभाषण शिविर का समापन समारोह उत्तराखंड सचिवालय स्थित देवेंद्र शास्त्री भवन में संपन्न हुआ। यह संस्कृत सम्भाषण शिविर उत्तराखंड संस्कृत अकादमी, हरिद्वार के तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए उत्तराखंड शासन के संस्कृत शिक्षा, सचिव दीपक कुमार गैरोला ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा संस्कृत के उत्थान के लिए अनुमोदित विभिन्न संस्कृत योजनाएं पूरे प्रदेश में गतिमान हैं। शीघ्र ही 13 संस्कृत ग्रामों का शुभारंभ किया जाएगा। संस्कृत अकादमी, संस्कृत शिक्षा निदेशालय, संस्कृत शिक्षा परिषद् एवं संस्कृत विश्वविद्यालय अपने-अपने स्तर पर संस्कृत प्रचार-प्रसार हेतु सक्रिय हैं। उन्होंने कहा संस्कृत प्रदेश की द्वितीय राजभाषा है इसके विकास के लिए हम सबको आगे आना होगा।

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री ने कहा कि हमारी शास्त्र-संपदा, जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति की पोषक है, उसका मूल स्रोत यह देववाणी संस्कृत है, अत: हमारे व्यवहार में संस्कृत का समावेश अनिवार्य होना चाहिए।

संस्कृत शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. आनंद भारद्वाज ने कहा कि शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भारतीय ज्ञान परम्परा पर ग्राम्य स्तर से लेकर प्रादेशिक स्तर तक विभिन्न योजनाओं पर कार्य चल रहा है। आधुनिक विज्ञान द्वारा संपादित अनेक महत्त्वपूर्ण शोध पहले से ही हमारे संस्कृत साहित्य में उल्लिखित हैं, जो अब प्रमाणित हो रहे हैं।

कार्यक्रम में संस्कृत शिक्षा की अनुसचिव गीता शरद्, अनुभाग अधिकारी संयोजिका तरुण धंजीवाल, अकादमी के वित्त अधिकारी सत्येंद्र कुमार डबराल ने अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन शोध अधिकारी डॉ. हरीश गुरुरानी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रकाशन अधिकारी किशोरीलाल रतूडी ने किया।

शिबिर प्रशिक्षक डॉ. महेश चंद्र मासिवाल और धीरज मैठाणी को प्रशस्ति पत्र व अंगवस्त्र से सम्मानित किया।

शिबिर में संस्कृत शिक्षा, सूचना एवं प्रौद्योगिकी, कार्यक्रम क्रियान्वयन विभाग कार्मिक एवं सतर्कता, सचिवालय प्रशासन, पुस्तकालय, समाज कल्याण, वन अनुभाग, युवा कल्याण, प्रोटोकॉल, मुख्य सचिव कार्यालय, ग्राम्य विकास, बेसिक शिक्षा, कृषि अनुभाग, गृह विभाग, मेडिकल सेक्शन, मत्स्य विभाग, नियोजन, सहकारिता, पशुपालन, नियमावली प्रकोष्ठ, गढ़वाल मंडल विकास निगम, उच्च शिक्षा, वित्त विभाग, औद्योगिक विकास सहित 32 विभागों के 58 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

समारोह का शुभारंभ वैदिक मंगलाचरण से हुआ। संस्कृत में प्रेरक वक्तव्यों एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से उपस्थित जनों ने प्रेरणा प्राप्त की। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के सहभागी पदाधिकारी एवं कर्मचारी विद्वज्जन समुपस्थित रहे।

मुख्य सचिव राज्य के विकास के लिए पहुँचे नई दिल्ली

विभिन्न मुद्दों पर केंद्रीय सचिवों से की भेंट

पंतनगर एयरपोर्ट के विस्तारीकरण का मिला आश्वासन

मुख्य सचिव ने नागरिक उड्डयन सचिव श्री समीर कुमार सिन्हा से भेंट की, जिसमें पंतनगर एयरपोर्ट के विस्तारीकरण को लेकर चर्चा की। सचिव श्री सिन्हा ने आश्वस्त किया कि आगामी छः माह में पंतनगर एयरपोर्ट का निर्माण हेतु Bidding Process प्रारंभ कर लिया जाएगा।

मुख्य सचिव ने देहरादून एयरपोर्ट पर देर रात्रिकालीन लैंडिंग की सुविधा हेतु भी अनुरोध किया। साथ ही हेली एम्बुलेंस सेवा को पुनः आरंभ करने, एवं पिथौरागढ़ एयरपोर्ट के सुदृढ़ीकरण को लेकर भी आग्रह किया, जिस पर नागरिक उड्डयन सचिव ने सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन दिया।

केदारनाथ में हुई हेलीकॉप्टर की क्रॉस लैंडिंग की घटना के संदर्भ में मुख्य सचिव ने यात्रियों की सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से यथोचित कार्रवाई की मांग की, ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके।

रोपवे और जल विद्युत परियोजनाओं से संबंधित प्रोजेक्ट की पर्यावरणीय क्लीयरेंस का किया गया अनुरोध

मुख्य सचिव ने वन एवं पर्यावरण सचिव श्री तनमय कुमार से भेंट कर त्यूणी-प्लासू जल विद्युत परियोजना, ऋषिकेश-नीलकंठ रोपवे प्रोजेक्ट, एवं सिरकारी भ्योल रूपासिया बगड़ जलविद्युत परियोजना के लिए वन स्वीकृति(wild life clearance@ environment clearance) प्रदान करने का अनुरोध किया।

ट्रैफिक मैनेजमेंट के लिए रीजनल ट्रैफिक ट्रांसिट सिस्टम का दिल्ली मेरठ से आगे ऋषिकेश तक विस्तार का अनुरोध किया गया

मुख्य सचिव ने आवास और शहरी कार्य मंत्रालय के सचिव श्री श्रीनिवास कटिकिथला से मुलाकात कर आरआरटीएस (रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम) को दिल्ली-मेरठ मार्ग से आगे हरिद्वार और ऋषिकेश तक विस्तारित करने हेतु अनुरोध किया। यह प्रस्ताव परीक्षण और दृश्यता रिपोर्ट के आधार पर क्रियान्वयन हेतु दिया गया। साथ ही देहरादून शहर में ट्रैफिक जाम और सार्वजनिक परिवहन की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव के लिये अनुरोध किया।

पेयजल और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन हेतु राज्य सरकार को दी जाने वाली धनराशि जारी करने का आग्रह

मुख्य सचिव ने पेयजल एवं स्वच्छता सचिव श्री अशोक केके मीणा के साथ बैठक कर राज्य में जल जीवन मिशन के अंतर्गत लंबित धनराशि लगभग 3000 करोड अवमुक्त किये जाने का अनुरोध किया। साथ ही स्वच्छ भारत मिशन के तहत चार धाम यात्रा के दौरान ठोस स्वच्छता प्रबंधन व्यवस्था हेतु विशेष ध्यान देने की बात रखी।

राज्य में आपदा के दौरान वायु सेना को अदा किए जाने वाले शुल्क में छूट की मांग की गई

मुख्य सचिव ने रक्षा सचिव श्री राजेश कुमार सिंह से मुलाकात कर राज्य के आपदा एवं राहत कार्यों के अंतर्गत भारतीय वायुसेना की सेवाओं के लिए देय शुल्क को माफ किए जाने का अनुरोध किया।

एमएसएमई सेक्टर को पूर्वोत्तर राज्यों की भांति 90ः लागत सहायता प्रदान करने का किया अनुरोध

मुख्य सचिव ने एमएसएमई सचिव श्री सुभाष चंद्र लाल दास से मुलाकात कर, पूर्वोत्तर राज्यों के भांति उत्तराखण्ड राज्य को एमएसएमई सेक्टर को बढ़ावा देने के लिये केन्द्र सरकार द्वारा 90 प्रतिशत तक लागत सहायता धनराशि के लिय अनुरोध किया। राज्य में फ्लैट फैक्ट्री एवं टूल रूम और प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, टेस्टिंग पैकेजिंग सेंटर जैसे केंद्रों को विकास करने हेतु अनुरोध किया गया।

उत्तराखंड के स्थानीय उत्पादों के अंब्रेला ब्रांड हाउस आफ हिमालय को प्रमोट करने का किया आग्रह

मुख्य सचिव श्री आनन्द बर्द्धन ने ग्रामीण विकास सचिव श्री शैलेश कुमार सिंह से

मुलाकात कर मनरेगा के तहत 270 करोड़ रुपए की लंबित राशि को अवमुक्त करने का अनुरोध किया। इसके अतिरिक्त 'हाउस ऑफ हिमालय' को सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव रखा गया, ताकि उत्तराखण्ड के हस्तशिल्प, उत्पादों और सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक पहचान मिल सके। इसके साथ ही दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों पर 'हाउस ऑफ हिमालय' के आउटलेट्स खोले जाने का अनुरोध किया गया।

उत्तराखंड को सुगम्य फिल्म डेस्टिनेशन बनाने के लिए फिल्म फेस्टिवल की मेजबानी का अनुरोध किया गया

मुख्य सचिव ने सूचना एवं प्रसारण सचिव श्री संजय जाजू से भेंट कर उत्तराखण्ड में राष्ट्रीय स्तर के फिल्म फेस्टिवल की मेज़बानी और राज्य में अधिक से अधिक फिल्मों की शूटिंग को प्रोत्साहित करने की दिशा में समर्थन माँगा गया। इसके अतिरिक्त व्यय सचिव श्री वी. वुअलनम से मुलाकात कर आगामी हरिद्वार कुंभ के लिए विशेष वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का आग्रह भी किया गया, ताकि आयोजन भव्य और सुव्यवस्थित रूप में संपन्न हो सके। मुख्य सचिव ने प्रधानमंत्री कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों एवं सलाहकार (मा0 प्रधानमंत्री) से मुलाकात कर राज्य की विभिन्न आवश्यकता यथा कुम्भ-2027 हेतु आर्थिक सहायता, नागरिक उड्डयन क्षेत्र के विस्तारीकरण व सुदृढ़ीकरण आदि हेतु अनुरोध किया गया।

प्रमुख वाहन निर्माताओं को उत्तराखंड में निवेश का दिया न्यौता

मुख्य सचिव श्री आनंद बर्द्धन ने उत्तराखंड निवास में प्रमुख वाहन निर्माताओं (टाटा मोटर्स, महिंद्रा, हुंडई, KIA मोटर्स, GSW आदि) के प्रतिनिधियों से मुलाकात कर, देश के विभिन्न राज्यों में लागू इलेक्ट्रिक वाहन नीति को लेकर विस्तृत चर्चा की। इस संबंध में उत्तराखण्ड राज्य में ईवी क्षेत्र को बढ़ावा देने हेतु निवेश संभावनाओं पर विचार-विमर्श हुआ।

अंतरिक्ष में नया इतिहास रचेंगे
लखनऊ के शुभांशु

विवेक रंजन श्रीवास्तव

3 अप्रैल 1984 को जब विंग कमांडर राकेश शर्मा सोयूज टी-11 यान में धरती की हदें लांघकर अंतरिक्ष में पहुंचे थे, तब उन्होंने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के 'भारत अंतरिक्ष से कैसा दिखता है?' के सवाल पर जवाब दिया था, सारे जहां से अच्छा'' । चार दशक बाद, 8 जून 2025 को शुभांशु शुक्ला एक्सिओम-4 मिशन के तहत अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) की यात्रा करेंगे और भारत के अंतरिक्ष यात्री बनकर इतिहास रचेंगे

शुभांशु शुक्ला का जन्म 10 अक्टूबर 1985 को लखनऊ में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वहां सिटी मॉन्टेसरी स्कूल में हुई। मात्र 16 वर्ष की आयु में उनके जीवन का निर्णायक मोड़ आया, जब एक मित्र ने उनके लिए राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA) का फॉर्म बिना परिवार को बताए भर दिया। यह छोटा सा कदम आगे चलकर उन्हें भारतीय वायुसेना में ले आया, जहाँ उन्होंने सुखोई-30, मिग-21 और मिग-29 जैसे लड़ाकू विमानों के साथ 2,000 से अधिक घंटे की उड़ान का अनुभव हासिल किया।

उनकी उपलब्धि पर पिता शंभू दयाल शुक्ला कहते हैं 'हमें यकीन नहीं था कि हमारा बेटा इतना बड़ा मुकाम हासिल करेगा।' तो माँ आशा शुक्ला कहती हैं- 'मैं ज्योतिष जानती थी। मैंने कहा था तू अंतरिक्ष जाएगा!'

2019 में शुभांशु को ISRO के गगनयान मिशन के लिए चार प्रस्तावित अंतरिक्ष यात्रियों में शामिल किया गया। इसी दौरान, भारत सरकार ने नासा और एक्सिओम स्पेस के साथ समझौता किया, जिसके तहत ISRO ने 550 करोड़ का भुगतान कर शुभांशु को एक्सिओम-4 मिशन में भागीदार बनाया। यह मिशन ISRO, NASA, ESA और एक्सिओम स्पेस का संयुक्त प्रयास होगा। इस मिशन से पहला कोई भारतीय आई एस एस पर जाएगा।

24 मई 2025 को शुभांशु और अन्य चालक दल के सदस्यों को 14 दिन के क्वारंटीन में भेज दिया गया है। ताकि अंतरिक्ष यात्रा से पहले किसी भी तरह के संक्रमण का जोखिम न रहे। 8 जून को भारतीय समयानुसार शाम 6:41 बजे, फ्लोरिडा के केनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स के ड्रैगन यान से प्रक्षेपण किया जाएगा।

इस मिशन का वैज्ञानिक योगदान सूक्ष्मगुरुत्व में भारतीय खाद्य प्रणालियों का परीक्षणए मैक्रोबायोटिक परिस्थितियों में बीजों को रखना, जिन्हें बाद में पृथ्वी पर उगाया जाएगा, अनुभवों को वीडियो और तस्वीरों के माध्यम से देशवासियों के साथ साझा करना होगा।

शुभांशु की यह यात्रा 2027 में गगनयान मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध होगी। इसरो चेयरमैन एस. सोमनाथ के नेतृत्व में भारत मानव अंतरिक्ष उड़ानों में स्वावलंबन की ओर बढ़ रहा, शुभांशु की कहानी हर उस युवा के लिए प्रेरणा है, जो साधारण परिवेश से निकलकर असाधारण सपने देखता है।

उत्तराखण्ड के लोक साहित्य को डिजिटल स्वरूप में किया जाएगा संरक्षितः मुख्यमंत्री

उत्तराखण्ड की बोलियों, लोक कथाओं, लोकगीतों एवं साहित्य के डिजलिटीकरण की दिशा में कार्य किये जाएं। इसके लिए ई-लाइब्रेरी बनाई जाए। लोक कथाओं पर आधारित संकलन बढ़ाने के साथ ही इन पर ऑडियो विजुअल भी बनाये जाएं। स्कूलों में सप्ताह में एक बार स्थानीय बोली भाषा पर भाषण, निबंध एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए। उत्तराखण्ड भाषा एवं साहित्य का बड़े स्तर पर महोत्सव किया जाए, इसमें देशभर से साहित्यकारों को बुलाया जाए। उत्तराखण्ड की बोलियों का एक भाषाई मानचित्र बनाया जाए।

यह बात मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सचिवालय में उत्तराखण्ड भाषा संस्थान की साधारण सभा एवं प्रबन्ध कार्यकारिणी समिति बैठक के अध्यक्षता करते हुए कही। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से अपील की है कि भेंट स्वरूप बुके के बदले बुक के प्रचलन का राज्य में बढ़ावा दिया जाए।

बैठक में निर्णय लिया गया कि उत्तराखण्ड साहित्य गौरव सम्मान की राशि 05 लाख से बढ़ाकर 05 लाख 51 हजार की जायेगी। राज्य सरकार द्वारा दीर्घकालीन साहित्य सेवी सम्मान भी दिया जायेगा, जिसकी सम्मान राशि 05 लाख रूपये होगी। राजभाषा हिन्दी के प्रति युवा रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए युवा कलमकार प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा। इसमें दो आयु वर्ग में 18 से 24 और 25 से 35 के युवा रचनाकारों को शामिल किया जायेगा। राज्य के दूरस्थ स्थानों तक सचल पुस्तकालयों की व्यवस्था कराने के साथ ही पाठकों के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकें एवं साहित्य उपलब्ध कराने के लिए बड़े प्रकाशकों का सहयोग लेने पर सहमति बनी। भाषा संस्थान लोक भाषाओं के प्रति बच्चों की रूचि बढ़ाने के लिए छोटे-छोटे वीडियो तैयार कर स्थानीय बोलियों का बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करेगा।

बैठक में निर्णय लिया गया कि जौनसार बावर क्षेत्र में पौराणिक काल से प्रचलित पंडवाणी गायन 'बाकणा' को संरक्षित करने के लिए इसका अभिलेखीकरण किया जायेगा। उत्तराखण्ड भाषा संस्थान द्वारा प्रख्यात नाटयकार 'गोविन्द बल्लभ पंत' का समग्र साहित्य संकलन, उत्तराखण्ड के साहित्यकारों का 50 से 100 वर्ष पूर्व भारत की विभन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य का संकलन और उत्तराखण्ड की उच्च हिमालयी एवं जनजातीय भाषाओं के संरक्षण एव अध्ययन के लिए शोध परियोजनों का संचालन किया जायेगा। राज्य में प्रकृति के बीच साहित्य सृजन, साहित्यकारों के मध्य गोष्ठी, चर्चा-परिचर्चा के लिए 02 साहित्य ग्राम बनाये जायेंगे।

भाषा मंत्री श्री सुबोध उनियाल ने कहा कि पिछले तीन सालों में उत्तराखण्ड में भाषा संस्थान द्वारा अनेक नई पहल की गई है। भाषाओं के संरक्षण और संवर्द्धन के साथ ही स्थानीय बोलियों को बढ़ावा देने की दिशा में तेजी से प्रयास किये जा रहे हैं। भाषा की दिशा में लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा अनेक पुरस्कार दिये जा रहे हैं।

इस अवसर पर प्रमुख सचिव श्री आर.के. सुधांशु, सचिव श्री वी.षणमुगम, श्री श्रीधर बाबू अदांकी, निदेशक भाषा श्रीमती स्वाति भदौरिया, अपर सचिव श्री मनुज गोयल, कुलपति दून विश्वविद्यालय डॉ. सुरेखा डंगवाल, कुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री एवं अन्य सदस्यगण उपस्थित थे।

जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

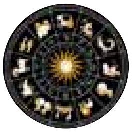
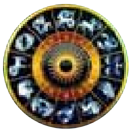

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

मेष राशि- पारिवारिक व्यवस्था को अनुशासित और शांतिपूर्ण बनाए रखने में आपका खास प्रयास रहेगा और आप काफी हद तक इन कामों में सफल भी रहेंगे। व्यापार से जुड़ी गतिविधियों में सुधार आएगा। साथियों और कर्मचारियों की सहायता से आवश्यकतानुसार काम चलते रहेंगे। प्रेम संबंधों से दूरी बनाकर रखें। भाग्यशाली अंक- 5

वृषभ राशि- विद्यार्थियों का पढ़ाई में अधिक ध्यान लगेगा। बदलाव से जुड़े कामों पर विचार होगा। किसी बड़े व्यक्ति की मदद लेने में संकोच न करें। लेकिन गुस्से की जगह शांति से समस्याओं को सुलझाएं और अपनी उपस्थिति जरूरी रखें। पति पत्नी के प्रयास से घर में सुखद माहौल रहेगा और सकारात्मक ऊर्जा बनी रहेगी। भाग्यशाली अंक- 9

मिथुन राशि- धार्मिक कामों में भी रुचि बढ़ेगी। युवाओं की कोई निजी समस्या दूर हो जाएगी। अपने करीबी रिश्तेदारों के साथ अच्छी बातचीत में भी कुछ समय जरूर बिताएं। व्यापार की व्यवस्था और काम करने का तरीका बेहतर बना रहेगा। पारिवारिक माहौल खुशियों से भरा रहेगा। किसी प्रकार की एलर्जी भी होने की संभावना है। भाग्यशाली अंक- 8

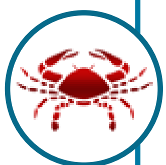

कर्क राशि- किसी नई योजना को शुरू करने में खूब मेहनत करें। सफलता भी मिलेगी। राजनीतिक गतिविधियों में गलत स्वभाव के लोगों से दूरी बनाकर रखना जरूरी है, नहीं तो इस वजह से आपका मान सम्मान भी खराब होगा। व्यापार से जुड़ी गतिविधियों में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। घर की व्यवस्था भी आरामदायक रहेगी। भाग्यशाली अंक- 9

सिंह राशि- अपनी समझदारी के बल पर कुछ ऐसे अच्छे नतीजे पाएंगे जिससे रिश्तेदारों के बीच और घर परिवार में मान सम्मान बढ़ेगा। पड़ोसियों के साथ किसी भी बहस में उलझने से मामला बढ़ सकता है, जिस वजह से मन कुछ दुखी ही रहेगा। नौकरी करने वाले लोगों को अपना लक्ष्य पाने में रुकावटें आएंगी। दांपत्य जीवन में अच्छा बना रहेगा। भाग्यशाली अंक- 3

कन्या राशि- किसी गलतफहमी के कारण पड़ोसियों के साथ कुछ बहस की स्थिति बन सकती है। रुके हुए कोर्ट केस से संबंधित मामला भी पूरा होने का समय आ गया है। सरकारी नौकरी वाले व्यक्ति किसी उलझन में पड़ सकते हैं। घर परिवार में सुख शांति का माहौल रहेगा। क्षमता से अधिक मेहनत के कारण पैरों और कमर में दर्द की समस्या रहेगी। भाग्यशाली अंक- 8

तुला राशि- दिन के दूसरे भाग में कुछ परेशानी भरा माहौल रहेगा। गलत शब्दों का इस्तेमाल करने से कुछ लोग नाराज हो सकते हैं। व्यापार में भविष्य से जुड़ी गतिविधियों की योजनाएं बनेंगी। युवाओं को प्रतियोगिता का परिणाम उनके पक्ष में मिलेगा। पति पत्नी के बीच निजी बातों को लेकर कुछ कहासुनी हो सकती है। कोई इंफेक्शन हो सकता है। भाग्यशाली अंक- 6

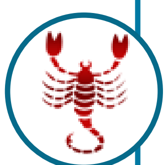

वृश्चिक राशि- किसी खास व्यक्ति की समस्या को हल करने में आपका योगदान रहेगा। इस समय कमाई के साथ-साथ खर्च भी ज्यादा रहेंगे। बेकार की गतिविधियों में समय बर्बाद न करें। किसी बड़े व्यापारी का मार्गदर्शन आपके भविष्य से जुड़े रास्तों को दिखाएगा। जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों का पूरा सहयोग मिलेगा और घर में सुख शांति रहेगी। भाग्यशाली अंक- 9

धनु राशि- भावनात्मक रूप से खुद को मजबूत महसूस करेंगे और अपनी योग्यता और मेहनत से अच्छे नतीजे भी पा लेंगे। कुछ समय अपने बारे में सोचने और विचार करने में जरूर लगाएं। प्रभावशाली व्यापारियों से संपर्क बनेंगे जो आपको एक नई दिशा भी देंगे। प्रेम संबंधों में एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना जरूरी है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। हरा, भाग्यशाली अंक- 8

मकर राशि- विद्यार्थियों को अपने किसी प्रोजेक्ट में अच्छी सफलता मिलेगी और इससे बहुत आत्मविश्वास भी बना रहेगा। कोई भी नया काम या निवेश करने से पहले उसके बारे में जांच पड़ताल जरूर कर लें। अधिकारियों से सहयोग पाने के लिए अपनी वाणी में मधुरता बनाए रखनी होगी। वैवाहिक संबंधों में मधुरता रहेगी आप स्वस्थ और ऊर्जावान रहेंगे। भाग्यशाली अंक- 7

कुंभ राशि- बड़े बुजुर्गों का प्यार और आशीर्वाद भी घर परिवार पर बना रहेगा। घर में निर्माण चल रहा है तो समर्थ से ज्यादा पैसा न लगाए। विद्यार्थी अपनी पढ़ाई पर खास ध्यान दें। व्यापार की दृष्टि से समय अच्छा आ रहा है। नौकरी करने वाले लोग अपने कामों को अच्छे से करेंगे। आपसी तालमेल की कमी के कारण घर की व्यवस्था को लेकर कुछ अनबन हो सकती है, भाग्यशाली अंक- 5

मीन राशि- मीडिया और ऑनलाइन गतिविधियों पर भी ध्यान दें। कुछ रचनात्मक और मनपसंद काम में समय बिताने से मन खुश रहेगा। किसी भी गलत काम या नकारात्मक सोच वाले लोगों से दूरी बनाकर रखें। नौकरी करने वाले लोगों के ऊपर कोई खास जिम्मेदारी आ सकती है। परिवार के लोगों के आपसी संबंध अच्छे और मददगार रहेंगे। भाग्यशाली अंक- 8

'हाउसफुल 5' ने एक हफ्ते में जमकर की कमाई, पर क्या हिट होने के लिए काफी है ये रफ्तार?

पिछले करीब 4 सालों से अक्षय कुमार की फिल्मों का रिलीज के कुछ दिनों के अंदर थिएटर्स में ठंडा पड़ जाना, एक ऐसा सीन रहा जिसने फिल्म बिजनेस और अक्षय फैन्स को बहुत निराश किया। मगर अब अक्षय की लेटेस्ट फिल्म 'हाउसफुल 5' ने फाइनली दोनों को थोड़ी राहत की सांस दी है।

पहले ही दिन से बॉक्स ऑफिस पर जोरदार कमाई कर रही 'हाउसफुल 5' ने अब थिएटर्स में एक हफ्ता पूरा कर लिया है। इस एक हफ्ते में फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर ऐसी मजबूत कमाई कर ली है जो अक्षय और उनके फैन्स को बहुत तसल्ली दे रही है। मगर क्या 'हाउसफुल 5' का बॉक्स ऑफिस भविष्य अब सुरक्षित हो चुका है? आइए बताते हैं कि इस फिल्म ने अबतक बॉक्स ऑफिस पर कैसा परफॉर्म किया है और इसके हिट होने का अब क्या गणित है।

एक हफ्ते में 'हाउसफुल 5' की दमदार कमाई

अक्षय की फिल्म ने ट्रेड एक्सपर्ट्स को सरप्राइज करते हुए उनके अनुमान से कहीं बेहतर शुरुआत की। पहले ही वीकेंड में फिल्म ने 90 करोड़ रुपये से ज्यादा कलेक्शन कर डाला। रिस्क ये था कि कहीं दमदार वीकेंड के बाद वर्किंग डेज में 'हाउसफुल 5' के साथ कोई खेल ना हो जाए। मगर ऑडियंस के सपोर्ट ने इस फिल्म को हफ्ते के कामकाजी दिनों में भी दमदार बनाए रखा।

सोमवार-मंगलवार को 'हाउसफुल 5' ने डबल डिजिट में कमाई की। बुधवार को पहली बार इसका कलेक्शन 10 करोड़ से थोड़ा नीचे जरूर गया लेकिन फिर भी कमाई 9.40 करोड़ रुपये रही। अब ट्रेड रिपोर्ट्स बता रही हैं कि गुरुवार को 'हाउसफुल 5' ने 7-8 करोड़ रुपये की रेंज में कलेक्शन किया है। यानी अब 7 दिन की कमाई से फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लगभग 133 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर लिया है।

दमदार है 'हाउसफुल 5' का कलेक्शन

अक्षय का हालिया रिकॉर्ड ऐसा है कि सिर्फ एक हफ्ते की कमाई से 'हाउसफुल 5', पिछले 3 सालों में उनकी सबसे कमाऊ फिल्म बन गई है। लॉकडाउन के बाद अक्षय के लीड रोल वाली फिल्मों में सबसे ज्यादा कमाई 2021 में आई 'सूर्यवंशी' ने की थी, जिसका लाइफटाइम कलेक्शन 196 करोड़ था। इसके बाद उनकी फ्लॉप फिल्म 'स्काईफोर्स' थी जिसका टोटल कलेक्शन 131 करोड़ रहा।

अब 'हाउसफुल 5' ने 'स्काईफोर्स' को पीछे छोड़ दिया है। इसी के साथ अब 'छावा' और 'रेड 2' के बाद, 'हाउसफुल 5' 2025 की तीसरी सबसे कमाऊ बॉलीवुड फिल्म भी बन गई है। बॉक्स ऑफिस पर अक्षय की फिल्म का ट्रेंड देखते हुए ये कहा जा सकता है कि ये 'छावा' के बाद इस साल बॉलीवुड की दूसरी 200 करोड़ वाली फिल्म बनने के लिए तैयार है।

सॉलिड कमाई के बावजूद 'हाउसफुल 5' पर है रिस्क

अक्षय की 'हाउसफुल 5' का बजट रिपोर्ट्स में 225 करोड़ रुपये बताया गया है। यानी करीब 250 करोड़ कमाने के बाद ही 'हाउसफुल 5' बॉक्स ऑफिस पर कामयाब कहा जा सकता है। जबकि एक ठीकठाक कलेक्शन के लिए इसे कम से कम 300 करोड़ कमाने की जरूरत है।

'हाउसफुल 5' ने पहले हफ्ते में सॉलिड

कलेक्शन के साथ बॉक्स ऑफिस पर मजबूती जरूर दर्ज करवाई है, लेकिन हर दिन फिल्म की कमाई थोड़ी-थोड़ी कम होती रही। फिर भी अक्षय की फिल्म के लिए पॉजिटिव चीज ये है कि इस वीकेंड थिएटर्स में बॉलीवुड से कोई फिल्म नहीं रिलीज नहीं हो रही।

'हाउसफुल 5' को बॉक्स ऑफिस पर नए वीकेंड में फिर से जंप भी मिलेगा और संडे की कमाई के बाद कलेक्शन 170-175 करोड़ की रेंज में रहने की उम्मीद है। हालांकि, 200 करोड़ से ठीकठाक आगे जाने के लिए 'हाउसफुल 5' को एक और वीकेंड की जरूरत होगी। मगर अगले शुक्रवार आमिर खान की 'सितारे जमीन पर' थिएटर्स में पहुंच रही है और इस फिल्म के लिए अच्छा माहौल बनता नजर आ रहा है।

आमिर की फिल्म अगर दमदार तरीके से थिएटर्स में एंट्री मारती है तो 'हाउसफुल 5' के लिए आगे की राह थोड़ी मुश्किल हो जाएगी। उस सूरत में अक्षय की फिल्म बॉक्स ऑफिस से अपना बजट रिकवर करने में ही कफी स्ट्रगल करना पड़ेगा, हिट कहलाना तो दूर की बात है।

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027

Silkyara™

हिमालय का वरदान
बद्री गाय का घी

उच्च हिमालयी क्षेत्र में पाई जाने वाली बद्री गाय जिसको "कामधेनु" भी कहा जाता है, का परंपरागत रूप से बनाया गया घी अब देहरादून में भी उपलब्ध है

- A2 प्रोटीन युक्त
- औषधीय गुणों से भरपूर
- इम्युनिटी बढ़ाने में लाभदायक
- पाचन में हल्का और बाल विकास में सहायक

कुमार स्वीट्स

- सहस्त्रधारा रोड, निकट क्रॉसिंग
- धर्मपुर, निकट एलआईसी बिल्डिंग

पर उपलब्ध है।

fssai 22623030001586
UDYOG AADHAR MSME UK050061483

THE DOON HIMALAYAN AGRO FOODS
Dehradun
Lokesh Asthana - 7409782771